The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 3 | March 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत में आर्थिक असमानताओं के सामाजिक आयामः समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
डॉ० बी०आर० अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान वि०वि०
महू (म०प्र०)

ARTICLE DETAILS
Research Paper

Keywords :
आर्थिक असमानता, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिणाम, असमान वितरण, संपत्ति, सामाजिक तनाव

ABSTRACT
भारत में आर्थिक असमानता वर्तमान समय में एक गंभीर चुनौती बन गई है। यह केवल आय और धन का अंतर नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक आयाम भी हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखे तो आर्थिक असमानता समाज की संरचना, सामाजिक गतिशीलता और अवसरों की उपलब्धता को बहुत अधिक प्रभावित करती है। इस अध्ययन का ध्येय यह विश्लेषित करना है कि भारत में आर्थिक असमानताओं के कारण समाज के विभिन्न वर्गों में किस प्रकार के सामाजिक परिणाम उत्पन्न हो रहे हैं। इसमें आय और संपति के असमान वितरण, जातिगत, क्षेत्रीय और लिंग आधारित असमानताएँ, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं में अंतर, और सामाजिक अवसरों में असमानता पर अधिक ध्यान दिया गया है। उच्च आर्थिक असमानता वाले इलाको में अपराध, सामाजिक तनाव के साथ ही असंतोष की प्रवृति अधिक होती है। महिलाओं और कमजोर वर्गों पर इसका विशेष असर पड़ता है, इस कारण संसाधनों एवं अवसरों में असमानता उनके जीवन स्तर, शिक्षा व स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। शोध पत्र यह भी दर्शाता है कि आर्थिक असमानता को निम्न करने के लिए नीतिगत सुधार, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का समान वितरण, महिलाओं का

सशक्तिकरण और सामाजिक चेतना अभियान आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक अवसरों का संतुलित वितरण समाज में असमानताओं को घटाने में सहायक होगा।

प्रस्तावनाः—

आर्थिक असमानता और सामाजिक विकास आज भारत जैसे विकासशील देशों के हेतु एक अहम विषय बन चुके हैं। आर्थिक असमानता केवल धन और आय का अंतर मात्र नहीं है, वरन् यह एक बहुआयामी मुद्दा है जिसका प्रभाव समाज के हर पहलू—शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक गतिशीलता और सांस्कृतिक संरचना पर पड़ता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में आर्थिक असमानता विभिन्न स्तरों पर परिलक्षित होती है, जैसे कि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के बीच, उच्च और निम्न आय वर्ग के मध्य पुरुषों एवं महिलाओं के बीच, तथा विभिन्न जातियों और सामाजिक वर्गों के बीच। यह असमानता केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं बल्कि सामाजिक संरचना और समाज के विकास के मार्ग पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

समाजशास्त्रीय संदर्भ में देखा जाए तो आर्थिक असमानता समाज के भीतर शक्ति, अवसर और संसाधनों के वितरण से जुड़ी होती है। जब समाज में संसाधनों का असमान वितरण होता है, तो यह सामाजिक गतिशीलता को बाधित करता है और विभिन्न वर्गों के बीच विभाजन में अभिवृद्धि करता है। उदाहरणतः उच्च आय वर्ग के लोग बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच रखते हैं, जबकि निम्न आय वर्ग के लोग इन सेवाओं से वंचित रह जाते हैं। इस वजह से शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों में असमानता प्रोत्साहन मिलता है, तथा समाज में अवसरों की असमानता भी उत्पन्न होती है।

भारत में आर्थिक असमानता के अनेक कारण हैं। जिनमें औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, और आर्थिक नौतियों में असमान लाभ वितरण आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं। ग्रामीण भागों में भूमि और कृषि संसाधनों का असमान वितरण, पारंपरिक जातिगत व्यवस्था, महिलाओं की पिछड़ी सामाजिक व आर्थिक स्थिति, तथा शिक्षा में असमानता भी आर्थिक विषमता को प्रोत्साहित करते हैं। इसके

अतिरिक्त, शहरो में तेजी से बढ़ती आबादी और रोजगार के सीमित अवसर उच्च और निम्न आय वर्ग के बीच अंतर की और गहरा करते हैं।

अर्थव्यवस्था में असमानता केवल आर्थिकदृष्टि में ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि में भी गंभीर परिणाम उत्पन्न करती है। सामाजिक असमानता और आर्थिक असमानता के बीच गहरा संबंध है। जब समाज में कुछ वर्गों को अवसर, संसाधन और सुविधाएँ प्राप्त होती है और अन्य वर्ग इनसे वंचित रहते हैं, तो यह स्थिति सामाजिक तनाव और असतोष को जन्म देती है। यह असमानता अपराध भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, और सामाजिक अस्थिरता को बल मिलता है। इसके अतिरिक्त, महिलाओं और कमजोर वर्गों पर इसका खास असर पड़ता है, क्योंकि सामाजिक व आर्थिक अवसरों में कमी उनके जीवन स्तर और सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती है।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भी असमानता का प्रभाव प्रत्यक्ष तौर पर दिखाई देता है। उच्च आय वर्ग के परिवारों के बच्चे अच्छी शिक्षा पाते हैं, जिससे वे उच्च आय वाले रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। वहीं, निम्न आय वर्ग के बच्चे सीमित संसाधनों और शिक्षा की गुणवता की न्यूनता के कारण अच्छे अवसर प्राप्त नही कर पाते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता के फलस्वरूप निम्न आय वर्ग के लोग स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से अधिक संघर्ष करते हैं, जिस वजह से उनके जीवन की गुणवता प्रभावित होती है।

इस अध्ययन का प्रयोजन यह समझना है कि भारत में आर्थिक असमानता केवल आर्थिक पैमाने तक ही परिमित नहीं है, अपितु इसके विविध सामाजिक आयाम और परिणाम भी हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह शोध यह विश्लेषित करता है कि आर्थिक असमानता समाज के विभिन्न वर्गों में अवसरों, संसाधनों और सामाजिक गतिशीलता पर कैसे प्रभाव डालती है। इसके साथ ही यह चिंतन यह समझने की चेष्टा करता है कि आर्थिक असमानता को कम करने और समाज में समान अवसरो को आश्वस्त करने हेतु कौन से निवारण अपनाए जा सकते हैं।

आर्थिक असमानता के प्रभाव केवल वर्तमान पीढ़ी तक सीमित नहीं रहते, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित करते हैं। यदि समाज में असमानता बढ़ती है, तो इसका दुष्प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता पर दिखाई देता है। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में आर्थिक

असमानता की वजह से कारण समाज के भीतर सामाजिक गतिशीलता का अभाव हो जाता है, और यह समाज के कमजोर समूहो को उनके सामाजिक तथा आर्थिक हक से वंचित कर देती है।

आर्थिक असमानता का सिद्धांत और समाजशास्त्र :–

आर्थिक असमानता का समाजशास्त्र की नजर मे अवलोकन समाज की संरचना, सामाजिक गतिशीलता और शक्ति वितरण के सिद्धांतों पर आधारित होता है। समाजशास्त्र के अनुसार, आर्थिक संसाधनों का असमान वितरण समाज के वर्गीय विभाजन को मजबूत करता है और सामाजिक गतिशीलता में बाधा उत्पन्न करता है। उच्च आय वर्ग समाज में अधिक शक्ति और अवसर प्राप्त करता है जबकि निम्न आय वर्गों के लिए संसाधनों और अवसर सीमित हो जाते हैं।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में वर्ग संघर्ष का मुर्ख्य आधार आर्थिक असमानता है। संपति और संसाधनों का असमान वितरण समाज में वर्गों के बीच शक्ति का असंतुलन पैदा करता है, जिससे सामाजिक तनाव और असंतोष में वृद्धि होती है। वहीं, वेबर का दृष्टिकोण संपत्ति, शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच संबंध को स्पष्ट करता है। वेबसर के अनुसार समाज में आर्थिक असमानता केवल धन के वितरण तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं तक पहुँच को भी प्रभावित करती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह भी प्रमाणित होता है कि आर्थिक असमानता समाज में सामाजिक गतिशीलता और अवसरों के समान वितरण को बाधित करती है। इससे कमजोर वर्गों हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा राजनीतिक भागीदारी के अवसर सीमित हो जाते हैं। फलतः सामाजिक असमानता, असंतोष और तनाव बढ़ता है।

भारतीय समाज में आर्थिक असमानताओं का स्वरूप :–

भारत में आर्थिक असमानता विभिन्न स्तरों और विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। जिनमे ग्रामीण और शहरी क्षेरों के मध्य असमानता, उच्च तथा निम्न आय वर्ग के माध्य अंतर, जाति और लिंग आधारित विभाजन, और संपति और अवसरों का असमान वितरण प्रमुख रूप हैं। शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण असमानता पहले से ज्यादा गहरी हुई है,

जबकि ग्रामीण भागों में भूमि तथा कृषि संसाधनों का असमान बंटवारा आर्थिक विषमताओं का प्रमुख कारण है।

जातिगत और सामाजिक संरचना भी आर्थिक असमानता को बल प्रदान करती है। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों व अन्य पिछड़े वर्गों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में अपेक्षित अवसर नहीं मिल पाते है, इस कारण से समाज में वर्गीय विभाजन और असंतोष प्रबल होता है। महिलाओं के मामले में भी आर्थिक असमानता साफ तौर पर देखी जाती है, क्योंकि महिलाओं के पास संपति, शिक्षा और रोजगार के अवसरो का अभाव होता हैं।

भारत में आर्थिक असमानता केवल धन के वितरण तक ही संकुचित नहीं है। यह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और जीवन स्तर को भी व्यापकता से प्रभावित करती है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों, पुरूषों तथा महिलाओं, उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बीच असमानता की प्रकृति को समझना सामाजिक नीति और विकास योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के विस्तार में असमानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उच्च आय वर्ग के परिवारों के बच्चे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करते हैं, जिससे उन बच्चों को बेहतर रोजगार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। वहीं निम्न आय वर्ग के बच्चे सीमित संसाधनों और गुणवत्ताहीन शिक्षा के कारण आगे नही बढ़ पाते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता के कारण निम्न आय वर्ग के लोग बीमारी, कुपोषण और मृत्यु दर में अधिक ज्यादा का सामना करते हैं।

सामाजिक गतिशीलता भी आर्थिक असमानता से प्रभावित होती है। उच्च आर्थिक संसाधनों वाले वर्ग अपने बच्चों को बेहतर अवसर प्रदान कर आगे बढ़ते हैं, जबकि निम्न आय वर्ग के लोग सामाजिक और आर्थिक सीमाओं में फंसे रहते हैं। महिलाओं और कमजोर वर्गों पर इसका विशिष्ट असर पड़ता है, क्योंकि संसाधनों और अवसरों में असमानता उनके जीवन स्तर और सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती है।

सामाजिक असमानता से उत्पन्न तनाव और असंतोष भी आर्थिक असमानता के परिणाम हैं। उच्च असमानता वाले क्षेत्रों में अपराध, भ्रष्टाचार और सामाजिक अस्थिरता की प्रवृत्ति अत्याधिक होती

है। इसलिए आर्थिक असमानता के सामाजिक आयाम को समझना और इसे कम करने के लिए प्रभावी उपाय अपनाना नितांत आवश्यक है। ताकि एक संतुलित समाज का निर्माण हो सके।

आर्थिक असमानताओं के कारण :–

भारत में आर्थिक असमानता के कई कारण हैं, जो सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होते हैं। प्रमुख कारणों में औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, भूमि और संसाधनों का असमान वितरण, शिक्षा व स्वास्थ्य में असमानता, और सामाजिक संरचना शामिल हैं।

औद्योगिकीकरण के साथ ही वैश्वीकरण ने भारत की अर्थव्यवस्था के विकास को तो गति दी है किंतु उस आर्थिक विकास का लाभ समान रूप से सभी वर्गों तक नहीं पहुँचा है। शहरी अंचलो में रोजगार और आय के अवसर बहुत हैं, जबकि ग्रामीण इलाको में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और संसाधनों की कमी उच्च वर्ग व निम्न आय वर्ग के माध्य अंतर को बढ़ाती है।

जातिगत और सामाजिक संरचना भी असमानता को बढ़ावा देती है। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में अपेक्षित अवसर प्राप्त नही होते है। महिलाओं के पास संपति और रोजगार के अवसर सीमित जिसक कारणवश उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर ही रहती है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता भी आर्थिक विषमता के प्रमुख कारण हैं। उच्च आय वर्ग के लोग बेहतर शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का लाभांश उठाते हैं, जबकि निम्न आय वर्ग के लोग इनसे वंचित रह जाते हैं। इसके कारण अवसरों और संसाधनों का असमान वितरण समाज में आर्थिक विषमताओं को गहरा कर देता है।

नीति और शासन में असमान लाभ वितरण भी आर्थिक असमानता के कारणों में शामिल है। साधनो का केन्द्रित बँटवारा ग्रामीण और शहरी भागों में योजनाओं का असमान कार्यान्वयन और कमजोर वर्गों के लिए पर्याप्त सुरक्षा एवं अवसर न होना आर्थिक असमानता को प्रबल करता है।

आर्थिक असमानताओं को कम करने और समाज में समान अवसर पुष्ट करने हेतु नौति और सामाजिक सुधार आत्यंत आवश्यक है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में प्रभावी नौतियाँ आर्थिक चुनौतियों को न्यून करने में तथा सिद्ध होगी।

(क) शिक्षा और कौशल विकासः –

सभी वर्गों के बच्चों और युवाओं को समान और गुणवतापूर्ण शिक्षा देना जरूरी है। सरकारी स्कूलों और विश्वविद्यालयों में साधनों का उचित वितरण, प्रशिक्षण कार्यक्रम कमजोर वर्गों हेतु उपलब्ध कराए जाने चाहिए। इसके माध्यम से सामाजिक गतिशीलता बढ़ती है और अवसरों का असमान वितरण कम होता है जो समानता से युक्त एक संतुलित समाज को जन्म देता है।

(ख) स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा :–

स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा कमजोर बगों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार बेहद जरूरी है। मुफ्त या किफायती स्वास्थ्य सेवाओं कुपोषण नियंत्रण कार्यक्रम और बीमारियों के खिलाफ जागरुकता अभियानों से स्वास्थ्य असमानता कम की जा सकती है।

(ग) रोजगार और आर्थिक अवसर :–

समाज में आर्थिक, सामाजिक असमानताओं को कम करने के ध्येय से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो में रोजगार के अवसरों को समान वितरण सुनिश्चित करना होगा। महिलाओं और कमजोर वर्गों को आर्थिक गतिविधियों में समाहित करने हेतु विशेष योजनाएँ बनाकर उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करने से भी आर्थिक असमानताओं को कम कर सकते है।

सामाजिक ज्ञान और नीति सुधारः आर्थिक असमानता और उसके सामाजिक प्रभावों के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना नितांत आवश्यक और अनिवार्य है। नीति निर्माण में पारदर्शिता, संसाधनों का न्यायसंगत बँटवारा और समाज के कमजोर वर्गों के हित को प्राथमिकता देना आर्थिक असमानताओं को कम करने के प्रयोजन से महत्वपूर्ण है।

इन उपायों और नीतियों के सहयोग से भारत में आर्थिक असमानताओं को मिटा सकते है, समाज में संतुलन एवं समान अवसर सुनिश्चित किए जा सकते हैं और सतत् विकास की मंजिल को प्राप्त हो सकती है।

निष्कर्षः—

अंतत भारत में आर्थिक असमानता और उसके सामाजिक आयामों का अध्ययन न सिर्फ आर्थिक नजरिए से वरन् सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा सतत् विकास के संदर्भ में भी अपरिहार्य है। यह शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है। कि समाज में आर्थिक असमानता को नियंत्रित करना, संसाधनों का समान वितरण करना, महिलाओं और कमजोर वर्गों को सशक्त बनाना, और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच आश्वस्त करना जरूरी है। इन उपायों के समर्थन से ही समाज में उन्नति और सामाजिक समानता सुनिश्चित हो सकती है।

इस प्रकार यह शोध पत्र प्रकट करता है कि आर्थिक असमानता केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, अपितु यह समाज की संरचना और सामाजिक संतुलन को प्रभावित करने वाली व्यापक समस्या है। समाजशास्त्र की नजर से यह अध्ययन दर्शाता है कि नीति निर्माण, सामाजिक जागरूकता और संसाधनों का संतुलित वितरण आर्थिक असमानता को कम करने और समाज में समान अवसरो की उपलब्धता हेतु बहुत जरूरी है।

अर्थशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखे तो आर्थिक असमानता केवल धन और आय के अंतर तक ही सीमित नही है, अपितु यह समाज मे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक गतिशीलता पर गहरा प्रभाव डालती है। भारत में आर्थिक असमानता के कारण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, उच्च और निम्न आय वर्ग, महिलाओं और कमजोर वर्गों के बीच अंतर गहरा हुआ है।

इस अध्ययन से प्रमाणित होता है कि आर्थिक असमानता समाज में अवसरों की असमानता व सामाजिक असंतोष उत्पन्न करती है। उच्च आय वर्ग बेहतर संसाधनों और अवसरों का लाभ उठाता है, जबकि निम्न आय वर्ग सीमित संसाधनों और अवसरों में फंसा रहता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक तनाव, असंतोष और अपराध जैसी घटनाओं में वृद्धि होती है।

इस समस्या का समाधान नीति और सामाजिक सुधार के साथ ही जन जागरण के द्वारा ही संभव है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक जागरुकता में सुधार के उपाय अपनाने होंगे कमजोर वर्गों को समान अवसर प्रदान करना, महिलाओं को सशक्त करना और नीति में पारदर्शिता सुनिश्चित करके ही समाज में फैली आर्थिक असमानताओं का निराकरण हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, अजय (2021), आर्थिक असमानता और सामाजिक विकास, नई दिल्लीः सागर पब्लिकेशन, पृष्ठ 45–67।
2. यादव, राधेश्याम (2019), भारत में आय और संपत्ति का वितरण, दिल्लीः ज्ञान पब्लिकेशन, पृष्ठ 112–135।
3. शर्मा, दीपक एवं शर्मा, प्रिया (2018), महिलाओं और आर्थिक असमानता, लखनऊः सामाजिक अध्ययन प्रकाशन, पृष्ठ 23–50।
4. सिंह, प्रेम (2022), सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक विषमता, जयपुरः राष्ट्रीय समाजशास्त्र प्रकाशन, पृ० सं० 78–101।
5. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), भारत सरकार (2021), (NFHS-रिपोर्ट 2019–21, मुंबईः IIPS, पृ०सं० 10–45।
6. भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण (2020–21), Economic Survey of india 2020–21, नई दिल्लीः वित मंत्रालय, पृष्ठ 55–102।
7. मिश्रा, रोहित (2017), वैश्वीकरण और भारत में असमानता, पटनाः प्रगति पब्लिकेशन, पृष्ठ 34–69।
8. वेबर, मैक्स (2002), सामाजिक संरचना और शक्ति वितरण, नई दिल्लीः लोक शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 101–125।
9. मार्क्स, कार्ल (2005), वर्ग संघर्ष और समाजशास्त्र, दिल्लीः ज्ञानदीप प्रकाशन, पृष्ठ 88–112।
10. रॉय, अनु (2016), सामाजिक न्याय और आर्थिक असमानता, कोलकाताः भारत समाजशास्त्र केंद्र, पृष्ठ 15–42।